A Quarterly News Letter of Maitree Jankalyan Samiti

मैत्री समूह

Chirping Sparrow

Year - 5, Issue-III, April to June 2009

गति प्रबल पैरों में भरी
फिर क्यों रहूँ दर–दर खड़ा
जब आज मेरे सामने
है रास्ता इतना पड़ा
जब तक न मंजिल पा सकूं,
तब तक मुझे न विराम है,
चलना हमारा काम है।

इस विशद विश्व – प्रहार में
किसको नहीं बहना पड़ा
सुख–दुख हमारी ही तरह
किसको नहीं सहना पड़ा
फिर व्यर्थ क्यों कहता फिरूं
मुझ पर विधाता वाम है,
चलना हमारा काम है।

मैं पूर्णता की खोज में
दर–दर भटकता ही रहा
प्रत्येक पग पर कुछ न कुछ
रोड़ा अटकता ही रहा
निराशा क्यों मुझे ?
जीवन इसी का नाम है,
चलना हमारा काम है।

–शिवमंगल सिंह सुमन

Pride of Society

मन्नू भंडारी

मध्यप्रदेश के भानपुरा नगर में 3 अप्रैल 1931 को जन्मी मन्नू भंडारी ने कलकत्ता विश्वविद्यालय से स्नातक (1949) और एम.ए. बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय (1952) से किया। मन्नू भंडारी ने कहानियां और उपन्यास दोनों लिखे हैं। "एक प्लेट सैलाब" (1962), "मैं हार गई" (1957), "तीन निगाहों की एक तस्वीर", "यही सच है" (1966), "त्रिशंकु" और "आंखों देखा झूठ" उनके महत्वपूर्ण कहानी संग्रह है। "आपका बंटी" (1971), "एक इंच मुस्कान" (1962), "महाभोज" (1979) उनके चर्चित उपन्यास हैं। आपने "बिना दीवारों का घर" (1966) शीर्षक से एक नाटक भी लिखा है। मन्नू भंडारी के उपन्यास "यही सच है" पर आधारित "रजनीगंधा" नामक फिल्म अत्यंत लोकप्रिय हुई और उसको 1974 की सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार भी प्राप्त हुआ था। बालीगंज शिक्षा सदन (1952–61), रानी बिड़ला कॉलेज (1961–64) में अध्यापन के बाद 1964 में वे मिरांडा कॉलेज में हिन्दी की प्राध्यापिका बनीं और अवकाश प्राप्त करने (1991) तक कार्यरत रहीं। अवकाश प्राप्त करने के उपरांत वे दो वर्षों तक उज्जैन में प्रेमचन्द्र सृजनपीठ की निदेशिका (1992–94) रहीं।

Young Achiver

Chinmay Jain, Kota

Young Jaina Awardee 2002,2004

X 88% XII 92%

AIEEE-2004 AIR- 5. IIT JEE - 2004 AIR- 26

B.Tech (CSc) from IIT B.

Working in McKnsey Bombay

Got selected in IIM A B C 2008

(CAT score: 99.91%ile)

Bhawna Jain, Sikar

Young Jaina Awardee 2002, 2004

CAT percentile 98.85

Selected for PGP IIM Bangalore

Gold Medallist MNIT Jaipur

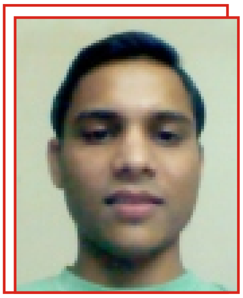

Abhishek Jain

Young Jaina Awardee 2005

Selected for PGP, IIM Bangalore

B.E, SGSITS INDORE

Chirping Sparrow

Year - 5, Issue - III

Chirping Sparrow is published quarterly by the **Maitree Jankalyan Samiti** 1/205, Professor Colony, Agra-282 002, E-mail : maitreesamooh@hotmail.com, Website : www.maitreesamooh.com Mobile: 94254-24984

It is circulated to all Young Jaina Awardees and friends of **Maitree Jankalyan Samiti.**

अनेकान्त का विज्ञानः विज्ञान का अनेकान्त

जैन धर्म में वस्तु का स्वरूप अनेकान्तमय अर्थात अनेक धर्मात्मक माना गया है और वास्तविकता भी यही है कि प्रत्येक वस्तु, व्यक्ति या अनुभूति बहुआयामी है। विशिष्ट एवं सूक्ष्म तथ्यों को ठीक–ठीक समझ पाने के लिए अनेकान्त की आवश्यकता न केवल अध्यात्म शास्त्र में होती है अपितु भौतिक–विज्ञान एवं लोक–व्यवहार में भी अनेकान्त की स्थान–स्थान पर आवश्यकता है। सत्य के अन्वेषण में अनेकान्त अत्यंत सहायक है।

जब हम वस्तु या व्यक्ति के बारे में जानने के लिए उसे विभिन दृष्टिकोणों से देखते हैं और अलग–अलग परिस्थितियों में उसे अलग–अलग पाते हैं तब ऐसा लगता है कि यह तो बडी मुश्किल खड़ी हो गयी। अनेकान्त हमारी इस मुश्किल को आसान कर देता है। प्रस्तुत लेख का उददेश्य है कि अनेकान्त का प्रायोगिक रूप समझ कर हम अपने जीवन में सरलता, सहिष्णुता और पारस्परिक सौहार्द ला सकें।

1. निष्क्रिय गेसौं की सक्रियता का अनेकान्त -

रसायन शास्त्र में हम सभी ने पढ़ा है कि हीलियम, निऑन, ऑरगन, क्रिप्टान एवं जिनान निष्क्रिय गैसें कहलाती हैं। अंग्रेजी में इन्हें इनर्ट गैस कहा जाता है। प्रारम्भ में जब यह देखा गया कि ये गैसें रासायनिक क्रियाओं में भाग नहीं लेती हैं तब इन्हें निष्क्रिय नाम दिया गया। शनैःशनै विज्ञान के विकास के साथ उनकी सक्रियता एव उपयोगिता भी दिखायी देने लगी विशेषतः भौतिक विज्ञान से संबंधित अनुसंधानों में इनका महत्व बहुत नज़र आने लगा। इस दृष्टि से इन्हें निष्क्रिय नहीं कहा जा सकता।

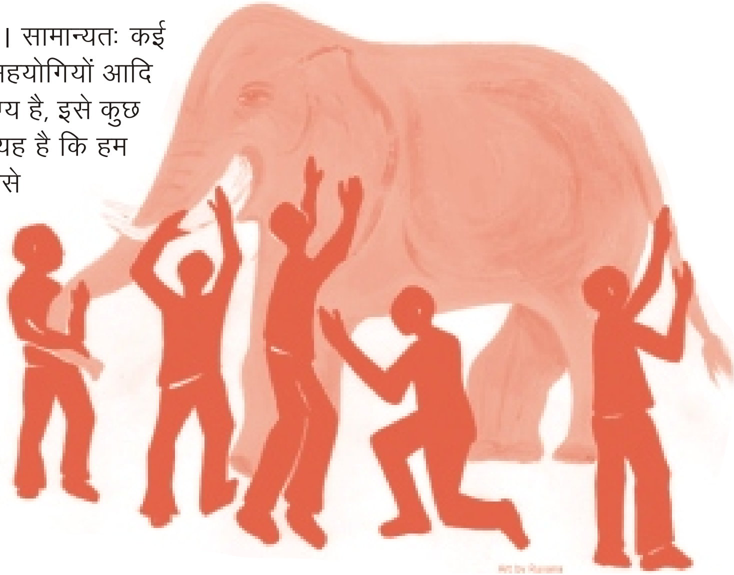

इससे हमारे जीवन में क्या प्रेरणा मिल सकती है ?थोड़ा विचार करें। सामान्यतः कई तनावों का कारण यह होता है कि हम अपने परिवार के सदस्यों या सहयोगियों आदि के बारे में यह धारणा बना लेते हैं कि अरे, यह व्यक्ति तो बिल्कुल अयोग्य है, इसे कुछ नहीं आता है, यह सुस्त है, स्मार्ट नहीं है आदि–आदि। मजे की बात यह है कि हम ऐसी धारणा कुछ ही कार्य–कलापों के आधार पर बना लेते हैं। जैसे किसी को तैरना नहीं आता हो, कम्प्यूटर पर कार्य करना न आता हो तो इसका अर्थ यह नहीं है कि वह व्यक्ति स्मार्ट नहीं है। हो सकता है उसे भाषाओं का ज्ञान अच्छा हो, वह कार ड्राइविंग में विशेष प्रवीण हो, उसे विज्ञान का ज्ञान अच्छा हो, वह उच्च चरित्र वाला हो या मानव व्यवहार में निपुण हो आदि–आदि।

अतः हमें यह जानना चाहिये कि यदि हम अपने संपर्क मे आने वाले व्यक्तियों की प्रतिभा समझने का प्रयास करें तो हमें उनकी बहुत सी विशेषताऐं नजर आ सकेगीं। कुछ ही बिन्दुओं के आधार पर किसी को निष्क्रिय या निरूपयोगी समझ लेंगे तो प्रतिभाओं से वंचित रह जायेगें।

2. सूक्ष्म एवं स्थूल दृष्टि का अनेकान्त -

जल के विभिन्न रूपों से हम परिचित हैं। वह बर्फ के रूप में ठोस एवं वाष्प के रूप में गैसीय होता है। द्रव रूप से तो हम भली भांति जानते ही हैं। अब एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह हो सकता है कि जल का एक अणु क्या है ? यानि जल का एक अणु ठोस है या द्रव है या गैस है ?

इस तरह जल के संबंध में निम्नांकित अनेकान्तात्मक कथन बनते हैं –

- एक अणु की अपेक्षा से जल न तो ठोस है, न द्रव है और न ही गैस है।

व्यावहारिक जीवन में इस अनेकान्त का उपयोग निम्नानुसार किया जा सकता है –

- मैं किसी कार्यालय का ऑफिसर हूँ अतः उस अपेक्षा मुझे ऑफिसर के कर्त्तव्य का निर्वाह करना है। मैं किसी क्लब का सचिव हूँ अतः उस अपेक्षा मुझे सचिव के कर्त्तव्य का निर्वाह करना है। मैं किसी संस्था का अध्यक्ष हूँ अतः उस अपेक्षा संस्था के अध्यक्ष के कर्त्तव्य का निर्वाह करना है।

- मैं स्वयं की अपेक्षा न तो अफसर हूँ, न क्लब का सचिव हूँ, और न ही किसी संस्था का अध्यक्ष हूँ। इस अपेक्षा इन सब बाह्य आवरणों का अभिमान मुझे नहीं होना चाहिए।

3. घृणा और प्रेम का अनेकान्त -

हम जानते हैं कि जहाज के रूप में लोहा पानी में तैरता है वही लोहा एक कील के रूप में पानी में डूब जाता है। रासायनिक अणुओं का एक जोडा एक–दूसरे के कारण किसी दूरी पर प्रतिकर्षण अनुभव करता है तो किसी अन्य दूरी पर आकर्षण का अनुभव भी करता है मजेदार बात यह है कि

भौतिक विज्ञान यह बताता है कि एक ही स्थिति में आकर्षण बल भी लगता है और प्रतिकर्षण बल भी । जब प्रतिकर्षण बल ज्यादा होता है तो हमें ऐसा लगता है कि वे प्रतिकर्षित कर रहे है और जब कभी आकर्षण बल ज्यादा होता है तो हमें ऐसा लगता है कि वे आकर्षित कर रहे हैं। मनोवैज्ञानिक भी यह स्वीकारते हैं कि एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति के प्रति जब प्रेम प्रतीत होता है तब भी थोड़ी घृणा उसमें छिपी रहती है। यानि घृणा एवं प्रेम का एक साथ अस्तित्व मनोवैज्ञानिक भी स्वीकारते है। अतः यदि हमें अपने प्रियजन की किसी मामले में नाराजगी या घृणा दिखायी दे तो हमें एक तो यह नहीं मानना चाहिये कि वह व्यक्ति हमसे स्थायी रूप से नाराज है या घृणा करने लग गया है। दूसरी बात यह समझने का प्रयास करना चाहिये कि कौन से कारण हमारे प्रियजनों में घृणाभाव पैदा करते हैं। हमारा यह अनेकान्तवादी सोच एवं विश्लेषण हमारे आपसी व्यवहार को अधिक अच्छा बना सकेगा।

इस उदाहरण से व्यावहारिक जीवन में एक उपयोगी मार्ग यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि लाभ समझ कर यदि किसी वस्तु में बहुत आसक्त हो रहे हों तो कुछ क्षण के लिए उसका दूसरा पक्ष भी विचार करें। इसी प्रकार जिसे हानिकारक समझकर बहुत नफरत कर रहे हों तो उसका भी दूसरा पक्ष सोच कर साम्यभाव धारण करने का प्रयास करें।

4. अदृश्य घटकों का अनेकान्त -

ट्रांजिस्टर के चालू करने पर गायक या गायिका के कण्ठ की जो आवाज सुनाई देती है। उसके बारे में निम्नांकित कथन बन सकते है–

1. आवाज ट्रांजिस्टर के पुर्जो से निकल रही है। उसमें गायक या गायिका को श्रेय बिल्कुल नहीं है। यदि ट्रांजिस्टर का एक भी पुर्जा खराब हो जाये तो गाना सुनाई नहीं देना चाहिये ।

2. आवाज गायक या गायिका की है , इसमें ट्रांजिस्टर का श्रेय नहीं है। यदि वह गाना रेडियो स्टेशन से रिले नहीं होता व उस गाने की तरंगे ट्रांजिस्टर में प्रवेश न करती तो ट्रांजिस्टर कितना ही अच्छा क्यों न हो उससे वह गाना नहीं बजता।

3. ट्रांजिस्टर के बजने में श्रेय ट्रांजिस्टर को भी है गायक या गायिका को भी है और रेडियों स्टेशन की तरंगों को भी है।

हम व्यावहारिक जीवन में इस अनेकान्त से यह समझ सकते हैं कि जो कुछ भी घटित होता है इसका श्रेय किसे व कितना दें। जैसे यह लेख मैं लिख रहा हूँ इसका श्रेय उनको भी है जिनसे लिखने की प्रेरणा मिली है व ऐसे कई पूर्व विद्वानों व मनीषियों को भी है जिनसे या जिनके ग्रंथो से मैंने शिक्षा ग्रहण की है। इसी तरह शरीर, परिवार के सदस्यों आदि सभी सहयोगियों का विचार करें तो लेख लिखने का अहंकार बहुत कम हो सकता है।

अहंकार न करने की यह प्रवृत्ति हमें अनावश्यक अपराध–बोध और पीड़ा से भी मुक्त करेगी। अप्रिय कार्य होने के लिए भी कई चीजें जिम्मेदार हो सकती हैं। सारी जिम्मेदारी स्वयं की ही मान लेने पर अपराध–बोध से भारी तनाव हो जाता है। आज डिप्रेशन की भयंकर समस्या का एक प्रमुख कारण अनावश्यक अपराध–बोध या अहंकार है ऐसा आधुनिक मनोवैज्ञानिक बताते हैं। अतः यह अनेकान्त हमें ऐसे तनाव एवं डिप्रेशन से बचाने में भी मदद कर सकता हैं।

5. अनेकान्त की अवक्तव्यता एवं क्वाण्टम सिद्धान्त -

प्रकाश ''कण '' के रूप होता है या वह तरंग की तरह है ? न्यूटन के समय से ही इसका उत्तर खोजा जा रहा है। इस विषय में विवाद भी रहा है। आज क्वाण्टम सिद्धान्त के आधार पर यह माना जाता है कि विवाद हल हो गया है। अब हम यह समझ गये है कि प्रकाश का स्वरूप शब्दों एवं चित्रों से परे है। हम यह जान गये हैं कि प्रकाश कण रूप भी है व तरंग रूप भी है, व दोनों रूप नहीं भी है। प्रकाश कथंचित् अवक्तव्य है।

यही बात इलेक्ट्रॉन आदि अन्यू सूक्ष्म कणों के बारे में भी कही जा सकती है। इस स्थिति से वैज्ञानिक अब परेशान भी नहीं है। वैज्ञानिक यह कहतें है कि इसका उत्तर महत्वपूर्ण नहीं कि प्रकाश क्या है ?महत्वपूर्ण यह जानना है कि किस परिस्थिति में प्रकाश क्या व्यवहार करेगा।

व्यावहारिक जीवन में इस तरह का अनेकान्त कई स्थानों पर उपयोगी है। जैसे एक व्यक्ति के दो विरोधी रूप हमें जब दिखाई देते हैं तो हम कई बार पेरशान हो जाते है। लाखों के दानी को भी कभी हम इस रूप में पा सकते हैं कि वह व्यक्ति कंजूस लगने लगे। अतः परेशानी से बचने के लिए किसी भी व्यक्ति पर ऐसे स्थायी लेबल नहीं लगाना चाहिए कि अमुक व्यक्ति महादानी है या अमुक व्यक्ति महाकंजूस है। आज के मनोवैज्ञानिक भी ऐसे लेबल लगाने को बहुत बड़ी गलती बताते हैं।

अतः कोई व्यक्ति क्षमाशील है या क्रोधी है– ऐसे प्रश्न के बदले महत्वपूर्ण यह जानना है कि किन परिस्थितयो में अमुक व्यक्ति के क्रोधित होने की संभावना अधिक है व किन परिस्थितियों मे अमुक व्यक्ति के शांत बने रहने की संभावना है।

व्यवहारिक जीवन में इस अनेकान्त से यह बात विदित होती है कि पाप से घृणा करो, पापी से नहीं। आत्मा को मलीन होने से बचाओ और आत्मा के शाश्वत निर्मल स्वभाव को मत भूलो।

डॉ. पारसमल अग्रवाल

Q. क्रोध को जीतने का उपाय बतायें ?

सविता जैन, फुटेरा दमोह

A. पहले हम क्रोध आने के कारणों पर विचार करें। हमारी अपेक्षाएं ही क्रोध का कारण हैं। हम दूसरे से अपेक्षा रखते हैं कि वह हमारे अनुकूल कार्य करे, और उसके विपरीत कार्य करने पर हम क्रोधित हो जाते हैं या कि कोई कार्य हमारे अनुरूप नहीं होता तो हम क्रोध से भर जाते हैं। इसलिए क्रोध को जीतने का सीधा सा उपाय है, कम से कम अपेक्षा दूसरों से रखें और सब कुछ हमारे मन का हो, ये भाव रखना छोड़ दें। क्रोध को जीतने का दूसरा उपाय यह भी है कि जब क्रोध आवे तो अपने आप को किसी रचनात्मक कार्य में व्यस्त कर लें। बचपन में जिस प्रकार जहाज या नाव बनाकर खेलते हैं इसी प्रकार आप भी क्रोध आने पर इस प्रकार के कार्यो में लग जायें जिससे आपका मनोरंजन होता हो। एक और उपाय करें कि क्रोध आने पर पानी पी लें तो क्रोध के उदय में जो हार्मोन Adrenalin निकलता है, वह पानी पीने से dilute हो जाता है। क्रोध आने पर हम प्रतिक्रिया स्वरूप कुछ ना बोलें, क्रोध के समय मौन कर जाना भी क्रोध को जीतने का उपाय है। क्रोध के समय विचार करें कि यदि इस समय हमारा प्रिय व्यक्ति सामने होता तो उसके सामने क्या हम क्रोध कर सकते हैं?इस प्रकार से क्रोध को जीता जा सकता है।

Q. आप अपने मुनि होने को आभूषण सहित किस प्रकार परिभाषित करेंगे?

A.

वाह! यह आपने अच्छा पूछा।
वीरों का आभूषण क्षमा है।
मैं ही क्यों, हर मुनि जो मुनि है,
उसका आभूषण क्षमा है!
प्रत्येक मुनि दया, क्षमा और
करूणा जैसे श्रेष्ठ आभूषणों
से सुसज्जित है! सचमुच,
मुनि होना यानि समस्त बाह्य
आभूषणों से मुक्त होकर भी
अंतरंग मृदुता से भर जाना है!

Q. पति परमेश्वर है, आज के आधुनिक युग में हर स्त्री के लिए क्या यह समझना उचित है।

सुलोचना वी.जैन, अहमदाबाद

A. पति को परमेश्वर तब माना गया है, जब वह गुणवान हो उसके भीतर परमात्मा जैसे गुण विद्यमान हों। सरलता, सहजता और संवेदनशीलता ये तीन गुण व्यक्ति को ईश्वर रूप के निकट ले जाते हैं। व्यक्ति की दृष्टि व्यक्ति के विचार और व्यक्ति के कर्म सभी कुछ सरल होना चाहिए साथ ही जैसे सूरज अपने समय पर बिना किसी अपेक्षा के निकलता है वैसे ही हमें भी सूरज की तरह सहज भाव से बिना किसी अपेक्षा के सबके प्रति सम भाव रखना चाहिए अर्थात अपने कर्म सहज रूप से करना चाहिए। संवेदनशीलता अर्थात परस्परता का बोध, हम सबके प्रति संवेदनशील बनें। अपने सुख–दुख के प्रति तो सभी संवेदनशील होते है परन्तु हमारी कठोर भावनाओं से किसी को पीड़ा का अनुभव हो तो यह अधूरी संवेदनशीलता है। हम दूसरे के दुख में भी पीड़ा का अनुभव करें ऐसी संवेदनशीलता होनी चाहिए। सरलता, सहजता और संवेदनशीलता इन तीन गुणों से जो युक्त है वह परमेश्वर मानने योग्य है वरना अवगुणी को परमेश्वर मानकर हम अपना अहित कर लेगें। जैसे कहते है कि सीता के समान पतिव्रता और पति को भगवान मानने वाली स्त्री पूज्य है तो इसमे आवश्यक है कि पति भी राम के समान मर्यादा पुरूषोत्तम और भगवत्ता के गुणों से युक्त हो।

Q. दीन दुखिःयो की सेवा करना या दर्शन करना दोनो में श्रेष्ठ क्या है ?

खुशबू जैन, सागर

A. अगर देखा जाए तो दोनो ही कार्य श्रेष्ठ हैं दीन दुखियों की सेवा करना, ये करूणा भाव भगवान ने ही हमें उपदेश देकर बताया है इसलिए जिन भगवान ने हमे श्रेष्ठ बातों का उपदेश दिया है, उनके प्रति श्रद्धा भक्ति अवश्य होनी चाहिए। इसलिए एक बार दर्शन करके उनके प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करना चाहिए।

Q. अच्छा काम करते समय सोचता हूँ कि इससे पुण्य होगा पर आप कहते है कि काम निस्वार्थ भाव से करना चाहिए ऐसे में सही दिशा-निर्देश दें।

अतुल जैन, सागर

A. कोई भी कार्य करते समय सबके प्रति अच्छे भाव रखना यह ही निस्वार्थ भाव से कर्म करना है , इसके द्वारा ही पुण्य का बन्ध होता है, इसलिए बिना किसी स्वार्थ के काम करना और पुण्य भावना से काम करना बात एक ही है।

Q. रात्रि के समय मोक्षशास्त्र आदि क्यों नहीं पढ़ना चाहिए। यदि इसका कारण जीव हिंसा मात्र है, तो हम मौन रहकर भी तो इसे पढ़ सकते हैं। यदि अन्य कोई कारण है, तो हम इसे सीखने के लिए क्यों नहीं पढ़ सकते हैं। कृपया समझाईए?

श्वेता सिंघई, सागर

A. मन्दिर में रात्रि में आरती वगैरह सावधानीपूर्वक करना चाहिए जिससे जीवन हिंसा कम से कम हो । रात्रि में सिद्धांत ग्रन्थों को नहीं पढ़ना चाहिए। तत्वार्थ सूत्र सिद्धांत ग्रन्थ नहीं है इसलिए उसे कभी भी सामायिक का काल छोड़कर पढ़ सकते हैं। तत्वार्थ सूत्र का एक–एक अध्याय सीखने के लिए कभी भी पढ़ सकते हैं और सीख सकते हैं।

Q. Do you think that there is a need to reform and modernize the code of conduct and vows of monks? For example, the restriction of travel has made it difficult to promote Jainism in the globalized world today?

A. The code of conduct of a Jain monk has a solid base of non-violence nd possession-less-ness. The life style of a Jain monk is extremely self-controlled. He is always engrossed in his religious practices with perfect alertness and care. He continues to ponder for welfare of all including his own. He always travels bare -footed for universal welfare. He prefers to visit only such places where he can strengthen his religious practices. It does not appear appropriate for a Jain monk to adopt violent and possessive practices for the propagation of religion and for doing public welfare. Travelling on foot maintains and strengthens the feelings of self-satisfaction, self-reliance and detachment. Use of transport involves greater possibility of dependence on others, dis-satisfaction and attachment. In my opinion, it is not proper to use any mode of transport for propagation of religion in violation of our basic principles. A monk can propagate the tenets of religion effectively and widely by remaining within the prescribed parameters. A scientist experiments in his laboratory and if his conclusions are good and useful, they get spread automatically and are followed everywhere. The scientist is not required to travel all over the world. Similarly, the Jain monk may not travel all over the world, but his conclusions based on the experiments and experiences in the area of non-violence, truth, non-stealing, chastity and possession-less-ness have spread far and wide and would continue to spread in future as well.

यदि आपको कोई शंका या प्रश्न है, तो हमें लिख भेजिये। मुनिश्री द्वारा उसका उत्तर दिया जाकर शंका का समाधान किया जायेगा। –सम्पादक

उन दिनों को नहीं भूलता...

हेनरी फोर्ड संसार के अग्रणी उद्योगपति थे। उन्होंने अपनी लगन व मेहनत से विश्व में एक अलग पहचान बनाई और अमेरिका में फोर्ड मोटर कम्पनी की स्थापना की। उनके नाम पर बनी फोर्ड कार को अभूतपूर्व लोकप्रियता मिली। एक भारतीय उद्योगपति भारत में मोटरकार का कारखाना लगाना चाहते थे। वह हेनरी फोर्ड को इतने कम समय में मिली सफलता से बेहद प्रभावित थे इसलिए वह कारखाना खोलने से पहले एक बार उनसे मिलकर उनकी कामयाबी का राज जानना चाहते थे। इसके लिये वह अमेरिका पहुँचे और हेनरी फोर्ड से मिलने के लिए समय लिया। हेनरी फोर्ड ने उन्हें कहा कि वह शाम 06 बजे उनके निवास पर आकर उनसे मिल सकते हैं। इतनी जल्दी समय मिलने पर उद्योगपति बेहद खुश हुए और वह निश्चित समय पर उनके घर पहुँचे। वहां पहुंच कर उन्होंने देखा कि एक व्यक्ति अपने खाने के बर्तन साफ कर रहा था। बर्तन साफ करने के बाद भारतीय उद्योगपति की तरफ देखकर बोला बैठिए, मुझे ही हेनरी फोर्ड कहते हैं। यह सुनकर उद्योगपति आश्चर्यचकित रह गए और उन्होंने कहा, 'आप इतने बड़े व्यक्ति होकर बर्तन स्वयं साफ कर रहे थे। यह काम तो एक नौकर भी कर सकता है।' उद्योगपति की बात सुनकर हेनरी फोर्ड मुस्कुराते हुए बोले 'मै शुरू में साधारण आदमी था। अपना काम स्वयं करता था। अपने कठोर परिश्रम के कारण ही मैं आज कारखानों का मालिक बन पाया हूँ। मैं उन दिनों को भूल कर खुद पर गर्व न करूं इसलिये अपना काम स्वयं करता हूॅ और सही मायने में यही मेरी सफलता का राज है। सफल होने के लिए सादगी व ईमानदारी का होना बहुत जरूरी है।' भारतीय उद्योगपति हेनरी फोर्ड की कामयाबी का राज समझ गए और उनके सामने नतमस्तक होकर वापस आ गए। रास्ते में उन्होंने संकल्प लिया कि वह भी अपने कार्य में पूर्ण ईमानदारी बरतेंगे तथा सादगीपूर्ण जीवन गुजारेंगे । जल्दी ही उद्योगपति ने भारत में अपनी अलग पहचान बना ली।

समाधान

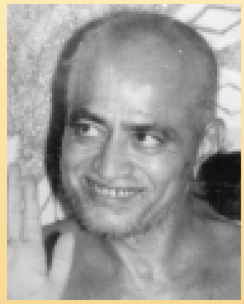

उन दिनों आगम व अध्यात्म ग्रन्थों का अवलोकन चल रहा था। आचार्य महाराज जो/जैसा, समझाते/बताते थे, उसे ग्रहण करने की कोशिश रहती थी, पर कई प्रश्न जानकारी के अभाव में अनसुलझे ही रह जाते थे। एक दिन साहस करके कुछ प्रश्न लेकर हम पहुंचे। आचार्य महाराज स्वाध्याय व लेखन में लगे थे। हम प्रणाम निवेदित करके एक ओर बैठ गए।

अचानक हमें लगा कि सारे प्रश्नों का उत्तर हमें आता है। व्यर्थ ही आचार्य महाराज का समय क्यों लिया जाए, सो हम पुनः नमोस्तु करके जाने लगे। आचार्य महाराज ने दृष्टि उठाकर हमें देखा तो लगा जैसे कह रहे हो की क्या बात है, कुछ पूछना था? हम क्या कहते। श्रद्धा से विगलित, भरे कंठ से कहा कि जो प्रश्न थे, वे अनायास ही आपका सामीप्य पाकर समाधान बन गए हैं। जीवन के हर समाधान आपके दर्शन से हम पाते रहें, ऐसा आशीष दें, वे मुस्करा कर अपने अध्ययन में लीन हो गए। जिनकी वीतराग–चितवन अनकहे ही हर प्रश्न का समाधान कर देती है। ऐसे आचार्य महाराज धन्य हैं।

आज जब और लोगों को भी ऐसे ही उनके श्री चरणों में समाधान पाते देखता हूँ तो पूज्यपाद स्वामी की पंक्तियाँ याद आती हैं।

"मुनि परिषन्मध्ये संनिषण्णं मूर्त्तमिव मोक्षमार्गमवाग्विसर्गं वपुषा निरूपयन्तं।"

मुक्तागिरि 1990

साँसें

साँसें मेरी हैं ।
इनके
जीवन भर साथ चलने
और अन्त में
रुक जाने का
मुझे पूरा भरोसा है ।
ये चलती रहती हैं
तब भी अपनी हैं
ये रुक जाती हैं,
तब भी तो
अपनी ही हैं।
मैं तो
इतना ही चाहता हूँ
कि जब तक चले
आसानी से चले
और जिस दिन रुकना हो
अच्छे से रुक जायें

-मुनि क्षमासागर

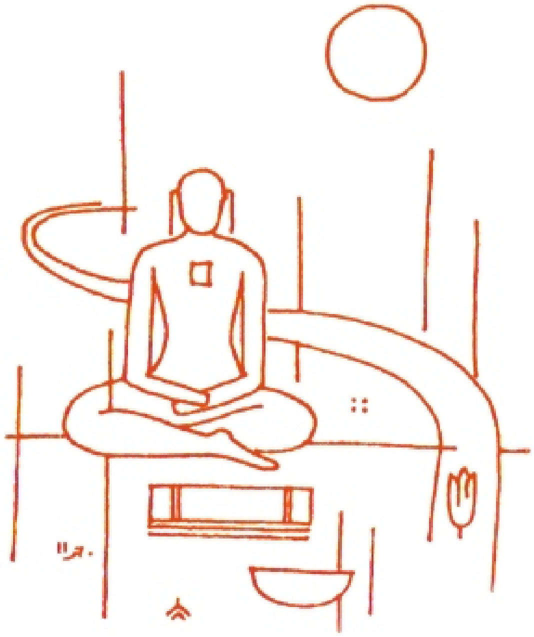

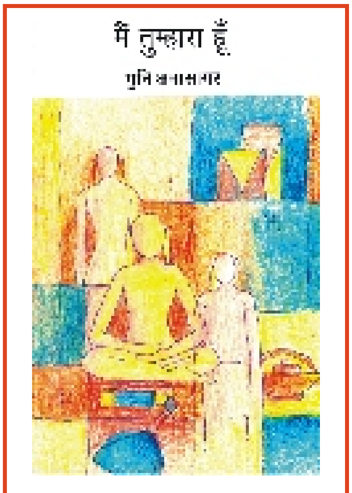

मैं तुम्हारा हूँ
कविता संग्रह मुनि क्षमासागर
प्रकाशक-राधाकृष्ण पब्लिकेशन, 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली
मूल्य-125 रूपये

णमोकार मंत्र और टॉफी

मुनि श्री क्षमासागर जी : संस्मरण प्रसंग

यह बात तब की है, जब मुनि श्री क्षमासागर जी इंदौर में अपना चातुर्मास कर रहे थे, याने 1996 की। कंचनबाग के समवशरण परिसर में श्राविकाओं के लिए बने भवन की पहली मंजिल पर उनका अस्थायी पड़ाव था। वहीं एक बड़े कक्ष में दोपहर बाद उनसे मिलने और बात करने काफी लोग प्रायः पहुँचते थे। ऐसी ही एक शाम, कक्ष लगभग भरा हुआ था। विभिन्न चर्चाएँ हो रही थीं कि एक तेरह –चौदह वर्ष का किशोर कक्ष में प्रविष्ट हुआ। उसे इतने शिष्टाचार के लिए भी अवकाश नहीं था, कि वह दीवार के पास से जगह बनाते हुये मुनिश्री के निकट पहुँचे। वह सबके बीच से ही लोगों को ठेलता, धकियाता आगे बढ़ता हुआ मुनिश्री के सामने हाथ जोड़, नमोऽस्तु कहते हुए रूका। उसकी यह अभद्रता लोगों को समझ में नहीं आई, क्योंकि वह दिखने में सुंदर, स्वस्थ और अपने परिधान में किसी अच्छे घर का लग रहा था। मुनिश्री ने उसे आशीर्वाद दिया और वह किशोर एकदम बोला,'' मेरी एक जिज्ञासा है। '' मुनिश्री ने उससे जिज्ञासा प्रकट करने के लिए कहा। उसने कहा, '' मै यह जानना चाहता हूँ कि अगर मुँह में टॉफी हो, और मैं उसे खा रहा हूँ, ऐसे समय यदि णमोकारमंत्र पढ़ने की भावना हो जाए, तो मुझे क्या करना चाहिए?क्या मुझे तत्काल टॉफी थूक देना चाहिए? यदि थूकने का स्थल न हो, तो क्या मुझे ऐसे स्थान पर जाना चाहिए, जहाँ मैं उसे मुँह से निकाल कर फेंक सकूँ?क्या मुझे उसे खाते रहना चाहिए, कि जब वह समाप्त हो जाए तब मैं कुल्ला करने के बाद णमोकार मंत्र पढ़ूँ?''

किशोर का यह प्रश्न सुनकर सभी उपस्थित लोग अवाक् रह गये। सभी को लगा कि यह तो इस किशोर ने ऐसा प्रश्न उपस्थित कर दिया है, जिसका उत्तर सभी को चाहिये । किसी ने फुसफुसाया, 'टॉफी मुंह में रखे णमोकारमंत्र पढ़ना तो पाप होगा।' किसी ने कहा, 'बिना कुल्ला किए कैसे णमोकार मंत्र कोई पढ़ सकता है? किसी ने कहा, ' टॉफी– प्रेमी को णमोकार मंत्र की याद ही कैसे आएगी?' पर सब मुनिश्री की ओर देख रहे थे और सभी को उत्सुकता थी, यह जानने की, कि मुनिश्री क्या समाधान व्यक्त करते हैं?

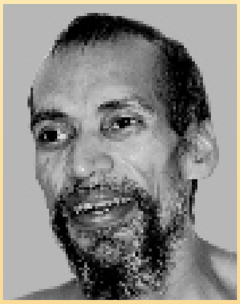

मुनिश्री ने उस किशोर से कहा, कि देखो णमोकार मंत्र पढ़ने में कभी कोई रूकावट नहीं है। अगर टॉफी मुँह में है, और णमोकारमंत्र पढ़ने का मन हो रहा है, और अगर उस समय तुमने नहीं पढ़ा, और टॉफी खत्म करने की प्रतीक्षा की, और फिर कुल्ला करने के लिए पानी खोजने निकले, तब तक हो सकता है, कि णमोकारमंत्र पढ़ने का जो मन हो रहा है, वह बदल जाए। जो भावना णमोकार मंत्र पढ़ने की पैदा हुई है, वह इतने समय में समाप्त ही हो जाए। इसलिए उचित यही होगा, कि टॉफी खाते हुये भी यदि णमोकार मंत्र पढ़ने का मन आए, तो जरूर पढ़ लेना चाहिए, पर एक बात जरूर ध्यान रखना, कि कहीं ऐसा न हो, कि तुम कभी णमोकारमंत्र पढ़ रहे हो, उस समय तुम्हारा मन टॉफी खाने का हो जाए। जीवन की किसी भी गतिविधि के बीच णमोकारमंत्र का स्वागत है, लेकिन णमोकारमंत्र से भरे हुए क्षणों में जीवन की ऐसी –वैसी गतिविधि के लिए अवसर नहीं होना चाहिये। ऐसा समाधान सुनकर सभी उपस्थितों को लगा, कि इस समाधान ने उनकी भी अनेक जिज्ञासाओं का शमन कर दिया है। यह भी लगा, कि चाहे उन्हें इस किशोर के आने और मुनिश्री तक जाने की शैली आपत्तिजनक लगी हो, पर उसका प्रश्न सटीक था, और अपने प्रश्न को पूछने का साहस प्रशंसनीय।

-प्रो. सरोज कुमार, इंदौर

NEWS

Nitin Jain

It has not happened many a times in Indian education history that a single person claims top ranks in both the prestigious engineering entrance exams. Nitin Jain of Faridabad secured the coveted AIR 1 in IIT JEE with AIR 1 in AIEEE also. He is also a part of the team that will represent India in International Physics Olympiad in Mexico. Chirping sparrow team takes this opportunity to congratulate Nitin and wishes him all the best for future.

अभिलाषा एकेडमी

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के आशीर्वाद एवं पूज्य मुनि श्री क्षमासागर जी महाराज के मंगल मार्गदर्शन से अभिलाषा एकेडमी अब दूसरे वर्ष में प्रवेश कर रही है। एकेडमी सुपर–30 टेक्नीक से IIT की तैयारी कराने वाला एक मात्र संस्थान है जिसमें 15 अनुभवी योग्य शिक्षकों द्वारा एक बैच में 30 विद्यार्थियों को पढ़ाया जाता है जिससे प्रत्येक विद्यार्थी को Personal Attention प्राप्त होता है। अभिलाषा एकेडमी ''ज्ञान ज्योति स्कालरशिप'' के अन्तर्गत 11वीं में प्रवेश करने वाले विद्यार्थियों को रू. 20,000 / – की स्कालरशिप एवं 12वीं में प्रवेश करने वाले विद्यार्थियों को रू. 10,000 / – की स्कालरशिप IIT-JEE / AIEEE की तैयारी करने हेतु देती है।

अभिलाषा एकेडमी 209, ओणम प्लाजा, इंडस्ट्री हाऊस के पास, इन्दौर (म.प्र.) मो. 94066 06898

पिछले अंक में ''विवाह आजकल वैभवप्रदर्शन का साधन'' इस विषय पर आपके विचार आमंत्रित किये थे। आपसे प्राप्तविचारों में से कुछ को हम प्रो. रतनचंद जैन, भोपाल के विचारों के साथ इस अंक मे शामिल कर रहे हैं।

विवाह संस्कार अणुव्रत, गुणव्रत और शिक्षाव्रतधारी श्रावकों का संस्कार है इसलिए उसमें परिग्रह परिमाण एवं भोगोपभोगपरिणाम व्रतों की झलक दिखाई देनी चाहिए, किन्तु हमने इसे वैभवप्रदर्शन का साधन बना लिया है। इस प्रयोजन से बेहद कीमती चमकदमकवाले, भारी भरकम निमंत्रण पत्र छपवाये जाते हैं। इसमें इतना खर्च किया जाता है कि एक निमंत्रण पत्र की कीमत सौ–सौ, दो–दो सौ रूपयों तक पहुँच जाती है। विवाह का पंडाल इतना विशाल बनवाया जाता है और उसे रेशमी परदों, ट्यूबलाईटों आदि से ऐसा सजाया जाता है कि लगता है जैसे किसी राजदरबार या इन्द्रसभा का फिल्मी सेट हो। भोज के लिए तरह–तरह के खानें के अनगिनत स्टॉल लगाये जाते हैं और शोभायात्रा के समय मंहगे बैण्ड बाजों, आतिशबाजी में हजारों रूपये फूँक दिये जाते हैं। इस तरह विवाह के धार्मिक अनुष्ठान को परिग्रहपरिमाण और भोगोपभोगपरिमाण व्रतों की धज्जियाँ उड़ाने वाला कृत्य बना दिया जाता है। कई बार विवाह संस्कार रात्रि में किया जाता है, जिससे रात्रि में ही पूजन–हवन आदि धार्मिक क्रियाएँ सम्पन्न होती हैं, जबकि अहिंसाप्रधान जैनधर्म दिन में ही हवन–पूजन आदि धार्मिक क्रियाएँ करने की अनुमति देता है। रात्रि में विवाह विधि सम्पन्न करने से खाना पीना भी रात्रि में होता है, जो श्रावकधर्म के लिये ठीक नही है। दिन में विवाह करने से हिंसा भी कम होती है वहीं खर्च भी कम होता है। भोजन में व्यंजनों की संख्या सीमित रखने से रात्रि में भोजन सामग्री बनाने से होने वाली हिंसा और खर्च से बचा जा सकता है। विवाह एक धार्मिक अनुष्ठान है, उसे संयत, परिष्कृत और शोभनीय प्रवृत्तियों के परिवेश में ही सम्पन्न किया जाना चाहिए। इस धार्मिक अनुष्ठान को धनलोभ, वैभव प्रदर्शन, व्यसनपरकता, रात्रिभोज, बफे–भोजन पद्धति, और सड़कों पर अशोभनीय नृत्य जैसी विकृतियों से बचाते हुये कम खर्च में ही सम्पादित करना चाहिए।

प्रो. रतनचंद जैन, भोपाल

खर्चीली शादियाँ आजकल न केवल ट्रेंड बल्कि एक तरह से आवश्यकता बनती जा रही हैं। "लोग क्या कहेंगे" इस भय से निम्न आय वाले परिवार भी इस दौड में शामिल होने लगे हैं। एक "सफल शादी" कहलाने के लिए समाज ने अपने अलग मापदण्ड स्थापित कर लिए हैं, बजाय इसके की विवाह की विधि से एक होने वाले परिवारों तथा नव दम्पत्ति में कितना स्नेह, कितनी आपसी समझ है, लोग इस तरह की बातों पर अधिक चर्चा करते हैं कि उनकी शादी में कितने मेहमान शामिल हुए (या यूँ कहें कितनी भीड़ इकट्ठा हुई) कितना दहेज, कितनी अतिशबाजी, डी.जे. नाच गाना (यानि की शोर–शराबा) हुआ। परिणामतःएक शादी सम्पूर्ण करवाने का खर्च साल दर साल आसमान छूता नजर आ रहा है। शादी के परिधान, विवाह स्थल, खाने के मेनू से लेकर सभी चीजें इतनी महंगी हो गई हैं कि दुल्हा–दुल्हन के माता–पिता (और कई जगहों पर स्वयं दुल्हा–दुल्हन) कर्ज लेकर खर्च चलाते हैं। विवाह से जुड़े स्नेह एवं पवित्रता का स्थान बाहरी दिखावे ने ले लिया है। कई लोग मानते हैं कि शादी जीवन में एक बार होने वाला समारोह है सो आप कितना भी खर्च करते हैं इसकी आपको चिन्ता नहीं होनी चाहिए। यह सही है कि विवाह एक विशेष समारोह है, परन्तु यह आवश्यक तो नहीं कि एक विशेष अवसर महंगा या खर्चीला भी हो। प्रायः हम विशेष और महंगे इन शब्दों को समानार्थी मान बैठते हैं और अनावश्यक अपव्यय करते हैं। हमें यह सोचने की आवश्यकता है कि एक सफल शादी हम किसे कहते हैं?क्या इसका अर्थ अपने लिए सुयोग्य वर–वधू से जीवन जोड़ना नहीं है ?क्या हमारे लिए सफल शादी वही है जिसमें सबसे अधिक खर्च हो ? क्या वो नही जिसमें समारोह ही अपने आपमें आनन्द से भरपूर हो भले वह खर्चीला हो या मितव्ययी ?

योगेन्द्र जैन, हैदराबाद

हमारे अच्छे संस्कारों और संस्कृति के कारण हम में से कई मानते हैं कि विवाह में होने वाले अनावश्यक दिखावे एवं तामझाम का हमें विरोध करना चाहिए, पर सामने वाले पक्ष या सामाजिक दवाब, रिश्तों के बंधन या प्रतिकार करने का साहस न हो पाने के कारण कभी–कभी हमें भी इसी तरह के विवाह कार्यक्रमों में शामिल होना पड़ता है, परन्तु छोटे–छोटे प्रयासों से इसमें बदलाव लाया जा सकता है और हमें इस दिशा में पहल करना चाहिए। चलिये बड़े–बड़े खर्च जैसे पैंडाल, रोशनी, डी.जे. के बारे में मत सोचिये पर क्या हम शादी के महंगे कार्ड न छपाकर थोड़ी राशि बचाकर किसी बच्चे की पढ़ाई में सहयोग कर सकते हैं। शादी ब्याह में बनने वाली तरह–तरह के भोजनों में से कुछ संख्या कम करके और भोजन का अपव्यय न करके कई भूखे व्यक्तियों का पेट भर सकते हैं। क्या आपको नहीं लगता की राष्ट्रहित में इससे बेहतर कोई प्रयास होगा ?

आकाश जैन, बैंगलोर

किसी भी परिवर्तन की शरूआत खुद से होनी चाहिए है। हम समाज में जो भी सुधार लाना चाहते हैं, उसकी शुरूआत हम युवाओं को अपने को सुधार कर ही करनी होगी। मुझे सबसे आसान यही लगता है कि दूल्हे को अपने परिवारजनों को साधारण एवं सुसंस्कृत तरीके से विवाह करने हेतु राजी करना चाहिए।

साक्षी काला, जयपुर

People do spend a lot of money in marriages to show their status over others. Instead of wasting so much money in such show-offs we should give some money to their children as savings for their future use if they really want to give something to them. Hope that we will understand it soon and we will have a great society to live in.

Shubhi Jain

मास्टरजी का परिवार संतोषपूर्वक रहता था, परन्तु उनके घर में कोई संतान नहीं थी। शादी के कई वर्षों बाद उनकी यह इच्छा भी पूरी हुई और उनके घर बेटा हुआ। मास्टरजी और उनकी पत्नी अपने बेटे का संस्कारपूर्वक लालन पालन करते थे। एक बार बेटा बीमार हो गया, डॉक्टर ने कहा कि इसे निमोनिया हुआ है और इसे अण्डे का लेप लगाना होगा। मास्टरजी खामोश रहे और उन्होंने सिर नीचे कर लिया। उनकी पत्नी ने कहा कि अपने बेटे की जान बचाने के लिए मैं किसी चिडिया के बच्चे को नहीं मार सकती हूँ। और एक दिन वह बेटा मर गया। समय बीता और एक दिन मास्टरजी की पत्नी बीमार पड़ी। डॉक्टर ने उन्हें मछली का तेल खाने के लिए कहा। मास्टरजी खामोश थे, पर उनकी पत्नी ने मछली का तेल पीने से मना कर दिया और एक दिन मास्टरनीजी भी नहीं रहीं।

महावीर की अहिंसा का यह एक अप्रतिय उदाहरण है। यह अहिंसा करूणा से भरपूर और जीवन के कठिनतम समय में भी बनाये रखने की थी, परन्तु वर्तमान परिवेश में प्रतिकूल परिस्थितियों में तो छोड़िये, अनुकूल परिस्थितियों में भी अहिंसा का पालन नहीं किया जाता है। अपने छोटे–छोटे सुख और लालसाओं के लिए किसी की भी हिंसा करने को इंसान तैयार रहता है। यह हिंसा खाने में हो या सौन्दर्य सामग्री में या अन्य कई रूपों में देखने मिलती है। ऐसे में क्या महावीर की हिंसा समसामायिक नहीं रह गई है ? आप क्या सोचते हैं अपने विचारों से हमें भी अवगत कराएं।

इस समस्या पर आपके क्या विचार या सुझाव हैं। हमें लिख भेजिये या मेल कीजिये–
maitreesamooh@hotmail.com / samoohmaitree@gmail.com

आपके पत्र

मैं विगत कई माह से CHIRPING SPARROW पढ रहा हूँ, इसमें मुझे काफी ज्ञान की बाते मिलती हैं। परमपूज्य मुनिश्री क्षमासागरजी महाराज आहार चर्या के बाद समय समय पर श्रावकों की शंका का समाधान करते थे। CHIRPING SPARROW के माघ्यम से यह पुनीत कार्य होने से काफी लोगों को लाभ हो रहा है । कृपया इसे जारी रखियेगा।

राजेश जैन, भिलाई

मैत्री समूह का मैं बहुत आभार व्यक्त करना चाहूँगी, क्योंकि मैत्री समूह जो Chirping Sparrow भेजता है , जिससे कि मुझे हमेशा अपने Aim की ओर आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती है। मैं इस पत्रिका को आते ही पढ़ने बैठ जाती हूँ। मुझे मुनि श्री क्षमासागर जैसे गुरू ने और भी अधिक मार्गदर्शन दिया है।

रूपम जैन, बंडा

I am very grateful to Maitree Samooh for such a wonderful newsletter. This newsletter is like blessings coming directly from Munishri to our home. All the sections of newsletter are very informative, useful and motivational. It also gives very good information about our religious beliefs. At last I am very thankful to Maitree Mamooh for sending me such an amazing newsletter.

SHASHWAT JAIN

I am very thankful to you for sending me such a nice newsletter. This newsletter is very precious for me as it not only gives me information about our religion but also encourages me by beautiful thoughts and provoking stories and poems. Our various myths and doubts about the religion are clarified by Munishri in a beautiful way. I really appreciate Maitree Samooh for their great efforts.

JHALAK JAIN (UJJAIN)

Received the current issue of Chirping Sparrow, found it full of knowledge and information. Chirping Sparrow helps us to realize our great principles . I am thankful to Maitree Samooh and want to receive all the future issues of Chirping Sparrow.

PRATEEK JAIN, JAIPUR

I am very happy to receive the newsletter 'Chirping sparrow'. I very much like the 'truth about traditions' section of the newsletter as it helps us in clearing our doubts about religious practices and our life. I would like to receive future issues of the magazine.

CHINMAY JAIN , KOTA

मोहताज

थाली में जूठन
फेंकने वाले
बचपन को
क्या पता
जवानी को
टुकड़ों का
मोहताज होना पड़ेगा।

-राजेन्द्र पटोरिया

ऐसा ही होता है

अखबार ने देश–प्रेम,
कर्त्तव्य निष्ठा की
बातें छापना शुरू
किया लोगों ने
अखबार ही बदल
दिया ।

-राजेन्द्र पटोरिया

भीड़

जमाने की इस भीड़ में
कभी अपने पराये हो जाते है
तो कभी पराये अपने लगते है
जो सुख के हमारे साथी थे कभी
वो दुख में आज हमसे कतराते है
किसे पहचान है इस भीड़ में
अपने और परायों की
कर दिखाना है कुछ ऐसा
उठकर ऊपर इस भीड़ से
जो बनाये सबको आपका और
आपको सभी का
मिटाना है इस भीड़ के अस्तित्व को
और रंगना है सबको एक रंग में
वह हो अपनेपन का ।

-एक अवार्डी

महत्वपूर्ण चिट्ठी

माँ की आवाज

एक राजा थे । वह जहाँ तक हो सके भोजन बालक राजकुमार के साथ ही किया करते थे । एक बार का वाकया है, वे भोजन करने बैठ रहे थे । तब राजकुमार पास ही में खेल रहे थे । राजा ने चार–पांच बार बालक को आवाज दी पर खेल में मशगूल बालक ने अनसुनी कर दी । लाचार पिता ने मां से उसे आवाज देने का अनुग्रह किया । मां ने एक बार धीरे से आवाज दी बालक दौड़ा चला आया । जब राजा राजकुमार के साथ खाना खने बैठ गए तब पिता ने मां से प्रश्न किया, तुम्हारी आवाज में ऐसी क्या कशिश थी कि बालक उल्टे पांव आ गया, जबकि मेरी चार–पांच पुकार अंतरिक्ष में ही रह गईं । मां ने तटस्थ भाव से उत्तर दिया, क्षमा करें महाराज । आपको स्वयं खाना खाना था। आपने इस स्वार्थ से बालक को आवाज दी । मुझे उसे खाना खिलाना था, मैंने इस निस्वार्थ भाव से उसे आवाज दी। आपकी और मेरी आवाज में सिर्फ यही फर्क था।

आलोक सेठी